Daily Gospel Reflections in Hindi

11 July 2019

योहन 6:60-63

SPIRIT GIVES LIFE

यह तो वाकई कठोर शिक्षा है। प्रभु जीवन की रोटी के बारे में शिक्षा दे रहे थे। और तो और प्रभु ने यह भी कह डाला कि मूसा द्वारा मरूभूमि जो मन्ना या रोटी दी गई थी, प्रभु द्वारा दी जाने वाली रोटी उससे कहीं ज्यादा बेहतर है। और वह जीवन की रोटी स्वयं प्रभु है, उनका शरीर है जिसको अपनाने से जीवन प्राप्त होगा, वह कभी नहीं मरेगा। जाहिर सी बात है कि उनके बहुतेरे शिष्य उनको छोड़ गये। मरूभूमि में मन्ना खाने के बावजूद यहूदियों के पूर्वज मर गये थे। प्रभु ने समारी स्त्री से कहा (Jn. 4:13) ''जो यह पानी पीता है, उसे फिर प्यास लगेगी, किन्तु जो मेरा दिया हुआ जल पीता है, उसे फिर प्यास नहीं लगेगी''। प्रभु निहितार्थ (Implicitly) से करते हैं कि वे समारियों के पिता याकूब से (Jn. 4:12) और मूसा से (Jn. 6:32,33) भी महान है।

प्रभु कहते है कि उनकी शिक्षा (His word Jn. 6:63) आत्मा और जीवन है '' आदि में शब्द था.... उसके द्वारा सब कुछ उत्पन्न हुआ...उस में जीवन था'' (Jn. 1:1-4)। यहां उल्लेख उत्पत्ती ग्रंथ की घटनाओं के बारे में है। हमारे आदी माता –पिता ने ईश्वर की आज्ञा (His word) का तिरस्कार कर, शैतान की बात मानकर आदेन वाटिका (स्वर्ग) के अपने जीवन को खो दिये। दुनिया के पाप को मिटाने हेतु ईश्वर दूसरी बार प्रलय नहीं लाते, बल्कि केवल शब्द मात्र से दुनिया को रचाने वाले ईश्वर अपने शब्द (येसु Jn. 1:1ff) से मनुष्य को जीवन प्रदान करना चाहते है (Jn. 6:63)। प्रभु की शिक्षा को अपनाकर प्रभु द्वारा दिये जाने वाले संजीवन जल और जीवन की रोटी पाकर हम मृत्यु से जीवन की ओर बढ़ जाते है, प्रभु के पुनःरुत्थान के सहभागी बन जाते है, एक नई सृष्टि बन जाते है। ''यह तो कठोर शिक्षा हैं'' (Jn. 6:60)।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019